इस्लामी भाईचारगी

इमादुल उलमा अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहिब क़िब्ला मुजतहिद

इस्लामी भाईचारगी व बिरादरी ही मुसलमानों की तरक़्क़ी, ख़ुशहाली और मज़बूती की सबसे बड़ी और सबसे ज़्यादा अहम बुनियाद है। हिजरत से पहले मक्का में भी यही भाईचारगी और एकता मुसलमानों का अपने दुश्मनों के मुक़ाबले में सबसे ज़्यादा असरदार हथियार था और जब हिजरत के बाद हुज़ूरे अनवर (स॰) और तमाम मुसलमान मदीने में आ गए तो यहाँ भी इसी भाईचारगी ने उनकी ज़िन्दगी और तरक़्क़ी में सबसे बड़ा किरदार अदा किया।

कौन नहीं जानता कि बेअ्सते सरवरे काएनात (स॰) से पहले इन्सानी जान व माल की कोई भी क़ीमत नहीं थी। एक क़बीला दूसरे क़बीले से लड़ाई पर आमादा था, एक आदमी अपनी दूसरे इन्सानी भाई का गला काटने और उसका ख़ून बहाने के लिए तैयार रहता था। ख़ून–ख़राबा और लूटमार की वजह से अरब का चप्पा–चप्पा बदअमनी का केन्द्र बन गया था। सरदारी और हुकूमत सिर्फ उसी को मिलती थी जिसके बाज़ुओं में ताक़त और हाथ में तलवार थी। मज़लूम और बेबस लोगों की क़िस्मत में बर्बादी और गुलामी के सिवा कुछ न था।

सरवरे काएनात (स॰) ने इस्लामी भाईचारगी का एलान करके लोगों को बताया कि हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है चाहे वह ग़रीब हो या अमीर हो, ग़ुलाम हो या आक़ा हो, हाकिम हो या महकूम हो। यही वह इलाही पैग़ाम था जो हुज़ूरे अनवर (स॰) के ज़रिए से इन्सानों तक पहुँचाया गया था और क़ुर्आने हकीम ने इन लफ़्ज़ों में बयान किया था:

अनुवाद– ''ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो जिस तरह ही डरने का हक़ है और तुम्हे मौत न आए मगर ऐसी हालत में कि तुम सच्चे मुसलमान हो और देखो तुम सब के सब मिल कर इलाही रिश्ते को मज़बूती से थामे रहो और आपस में टुकड़े–टुकड़े न हो जाओ और तुम अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद रखो कि तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन थे मगर यह अल्लाह ही की ज़ात है जिसने तुम्हारे दिलों को आपस में जोड़ दिया फिर तो तुम सब आपस में भाई–भाई बन गए।''

इसी तरह सूरए अनफाल आयत न0 46 में अल्लाह का इरशाद है:

अनुवाद– ''मुसलमानों! तुम आपस में झगड़े न करों यानी भरपूर इत्तेहाद और नज़्म व ज़ब्त के साथ ज़िन्दगी बसर करो क्योंकि अगर तुम में इत्तेहाद न रहा और आपस में झगड़ते रहे तो हिम्मत हार जाओगे और और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।''

इसी तरह सूरए हुजरात आयत न0 10 में है:

अनुवाद– ईमान वाले तो आपस में एक दूसरे के भाई हैं तो अपने दो भाईयों के दरमियान मेलजोल करा दिया करो और अल्लाह से डरते रहो तो कि तुम पर रहम किया जाए।''

इसी भाईचारगी व इत्तेहाद ने इन बे सरोसामान, ग़रीब व बेसहारा और बेयार व मददगार मुसलमानों को जिनके पास न तो दौलत ही थी और न ज़िन्दगी गुज़ारने का सामान, न उनके पास अपने दुश्मनों से बचने के लिए सामाने जंग था और न लोगों की ताक़त थी, कुछ ही दिन में दुनिया की बड़ी भारी सलतनतों और बाक़ायदा फौजों के लिए ना क़ाबिल तसख़ीर (जिन पर दुश्मन क़ब्ज़ा न पा सके) बना दिया था। इसी भाईचारगी ने मुसलमानों के अन्दुरूनी तमाम झगड़े मिटा डाले और बदतरीन दुश्मनों को बेहतरीन दोस्तों मे बदल दिया और इस दीनी भाईचारगी के रिश्ते को ख़ानदानी और ख़ूनी रिश्तों से ज़्यादा मज़बूत बना दिया। नज़र से नज़र मिली, क़दम से क़दम मिले और दिल से दिल मिल गए। फारसी की मिसाल हैः दो दिल अगर एक होकर मुत्तहिद हो जाएँ तो बड़े से बड़े पहाड़ भी उनके सामने थम नहीं सकते।

सरवरे काएनात ने जिस इत्तेहाद की तालीम दी थी वह सिर्फ ज़बानी इत्तेहाद न था, व अज़्म व इरादे का इत्तेहाद था। लिबास और रंग, ज़बान और जगह का इत्तेहाद न था बल्कि वह दिलों और रूहों का इत्तेहाद था। वह अल्लाह की बन्दगी और दीनी बराबरी का इत्तेहाद था जिसकी बदौलत मदीने के कुछ मुसलमान भूखे मज़दूरों और किसानों के क़दमों के सामने कुछ ही रोज़ में क़ैसर व किसरा के ताज लुटते नज़र आने लगे। इसी इत्तेहादी जज़्बे ने हाकिम व महकूम का फर्क़ मिटा दिया और सबको एक ही सफ में ला कर खड़ा कर दिया। मालदारों और अमीरों के दिलों में ग़रीबों के दुख दर्द का एहसास पैदा हुआ और साथ ही ग़रीबों और गुलामों के दिलों में अमीरों और आक़ाओं की मुहब्बत भी उभरने लगी क्योंकि इस्लाम ने इस तरह के तमाम तफरक़ों को सिर्फ ऊपर से ही नहीं जड़ से उखाड़ दिया था। हिजरत के बाद हुज़ूरे अनवर (स॰) ने मदीने में आते ही मुसलमानों को जिस बात की सबसे पहले तालीम दी थी वह यही आपस का इत्तेहाद व इत्तेफाक़ था। आपने मुहाजिरीन व अन्सार में से हर एक को दूसरे का भाई बना दिया जिसके बाद मदीने के अन्सार की यह हालत हुई कि उन्होंने मुहाजिरीन यानी अपने उन दीनी और इस्लामी भाईयों को अपनी मीरास में और अपनी जायदादों में भी शरीक बना लिया और अपनी कोई बड़ी से बड़ी क़ीमती चीज़ भी अपने उन दीनी भाईयों से अज़ीज़ न की और यही हालत ख़ुद मुहाजेरीन की भी थी कि वह अपनी अन्सारी भाईयों के पसीने पर अपना ख़ून तक बहा देने के लिए तैयार रहा करते थे। काश आज भी हम अपने इस चमकते हुए और रौशन माज़ी (गुज़रे हुए ज़माने) की एक झलक का भी तसव्वुर कर सकें तो हमारी सारी मुश्किलें एक लम्हें में ख़त्म हो जाएँ।

सरवरे काएनात (स॰) ने हमेशा क़ुर्आन के इरशादात और ख़ुद अपनी मुबारक हदीसों और सीरते तैयिबा से बाहमी इत्तेहाद और एकता और इत्तेफाक़ व मुहब्बत की तालीम दी जिसकी मिसाल दुनिया की किसी दूसरी क़ौम और उसके सरबराहों की ज़िन्दगी और तालीमात में नहीं मिलती। यह बेशक उसी इत्तेफाक़ और बाहमी मुहब्बत का नतीजा था कि मुसलमानों की शुरुआती शहरी ज़िन्दगी में उनकी तादाद की ज़बरदस्त कमी, ग़रीबी और बेचारगी, बे सरोसामानी और तमाम दुनियावी चीज़ों से महरूमी के बावजूद उनके ख़ुद्दार सरों और ताअते ख़ुदा व रसूल (स॰) से भरे हुए दिलों को बातिल की बड़ी से बड़ी क़ुव्वतें भी अपने सामने न झुका सकीं और ख़ून,

मौत और तबाही व बर्बादी के हौलनाक तूफ़ान भी उन हक़ परस्तों के क़दमों में ग़ुलामी की ज़न्जीरें न डाल सके। इस्लाम दुश्मन ताक़तें पूरी तरह जानती हैं कि मुसलमानों का नाक़ाबिले तस्ख़ीर (जिस पर दुश्मन क़ब्ज़ा न पा सके) हथियार हमेशा उनका बाहमी इत्तेफाक़ और उनकी भाईचारगी ही रही है इसलिए उनकी भरपूर कोशिश यही होती है कि वह इस भाईचारगी और बिरादरी के रिश्तों को टुकड़े–टुकड़े करके उनमें अफरातफरी और फूट डाल दें। तो फिर मुसलमानों पर किसी बाहरी हमले की ज़रूरत ही बाक़ी न रहेगी बल्कि ख़ुद ही अपनी मौत मर जाएँगे। हमें हालात का गहरी नज़र से मुताला (Study) करना चाहिए। हमारे माज़ी और हमारी पिछली तारीख़ ने हमें बहुत कुछ बता दिया है जिससे हमें अपनी उलझनें और मुश्किलें दूर करने में बहुत बड़ी मदद मिल सकती है और हम आसानी के साथ समझ सकते हैं कि किस चीज़ में हमारी ज़िन्दगी और तरक़्क़ी है और किस बात में तबाही व बर्बादी है लेकिन अगर हमने अपने शानदार माज़ी को भुला दिया और ज़ाती व इन्फेरादी मक़सदों पर इस्लामी भाईचारगी के तक़ाज़ों को भूल गए तो फिर हम इसके हौलनाक और तबाही वाले नतीजों के लिए भी पूरी तरह तैयार रहें जिन्हें हम किसी हालत में भी रोक न सकेंगे इसके साथ ही हमें यह भी याद रखना चाहिए कि दो मुसलमान आदमी जब आपस के इख़्तेलाफ दूर करने के लिए बैठते हैं और वह दिल से उस काम का बीड़ा उठाते हैं कि अब हम सच्ची भाईचारगी का सुबूत देंगे तो फिर उनके सामने न तो कोई शर्त व क़ैद हुआ करती है और न कोई क़ानून होता है जिसकी पाबन्दी के बग़ैर आपसी भाईचारगी व बिरादरी वजूद में न आ सके।

उनके सामने सिर्फ एक ही क़ानून और सिर्फ एक ही चीज़ होती है और वह है इस्लामी भाईचारगी, और उसकी हदें सिर्फ वही होती हैं जिन्हें अल्लाह की किताब और सुन्नते रसूल (स॰) ने बता दिया है। इन हदों की पाबन्दी करते हुए भाईचारगी का भरपूर और बिला क़ैद व शर्त मुज़ाहेरा इस्लाम की अस्ली रूह और मुसलमान की हक़ीक़ी ज़िन्दगी है।

सरवरे अम्बिया (स॰) की मुबारक हदीसों का ख़ुलासा यह है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का हक़ीक़ी भाई है। असली मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान की इज़्ज़त व आबरू और जान व माल महफ़ूज़ रहे, हर मुसलमान की इज़्ज़त और जान व माल हज के दिन और पाक काबा की तरह मोहतरम है।

इस्लाम के बदतरीन दुश्मन मुसलमानों को आपस में लड़ाना चाहते हैं। हमें उनसे होशियार रहना चाहिए और उनके इस ज़लील मक़सद को कामियाब न होने देना चाहिए। हमारी फूट और ना इत्तेफाक़ी इस्लाम दुश्मन ताक़तों की गहरी साज़िश का नतीजा है। आपस में ख़यालात का लेनदेन वह किसी भी तरह का हो मुहब्बत व ख़ुलूस और सच्चे बिरादराना जज़्बात के साथ होना चाहिए। राय का इख़्तेलाफ मज़हबी हो या सियासी, इज्तेमाई हो या निजी और ज़ाती इसमें हर सूरत में हुदूदे इलाहिया की ख़िलाफवर्ज़ी करना और उन्हें तोड़ना फरमाने ख़ुदा की तौहीन व तहक़ीर है जिसके जवाज़ का एक सच्चे मुसलमान के लिए तसव्वुर भी नही किया जा सकता।

इस्लाम, मुहब्बत व भाईचारगी का दीन है वह ना इत्तेफाक़ी, फूट और दुश्मनी व नफरत की तालीम नहीं देता। □□□